Vol 4 Issue 5 Feb 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
ISSN:-2249-894X
Impact Factor : 3.1402(UIF)
Vol. 4 | Issue. 5 | Feb. 2015
Available online at www.ror.isrj.org

गांधी दर्शन एवं सर्व धर्म सम्भाव

महेश कुमार रचियता

` व्याख्याता – राजनीतिक विज्ञान डॉ. बी.आर.ए. राज. महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

सारांश :- गांधीजी की धर्म एवं दर्शन सम्बन्धी मान्यताओं, अवधारणाओं एवं प्रस्थापनाओं का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि गांधीजी धर्म निरपेक्षता की अवधारणा में विश्वास करने के बजाय सर्वधर्म समभाव की अवधारणा में विश्वास करते थे। गांधीजी का सर्वधर्म समभाव सब धर्म–मजहबों की बुनियादी एकता पर आधारित था। सब धर्म–मजहबों के गहरे अध्ययन के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सभी धर्म मजहबों के बुनियादी सिद्धांत एक ही हैं, फर्क रूढ़ियों, कर्मकांडों और ऊपरी रीति रिवाजों में है। गांधीजी ने जहाँ एक ओर हिन्दू धर्मग्रंथों, वेदों, उपनिषदों, पुराणों और गीता आदि का अध्ययन किया वहीं दूसरी ओर बाइबिल, गुरूग्रंथ साहब, धम्मपद और जैन धर्म तथा पारसी धर्मग्रंथों का भी अध्ययन किया। इस गहन अध्ययन के बाद उन्हें यह सत्य स्वतः दृष्टिगोचर होने लगा कि दुनिया के सभी बड़े–बड़े धर्मों के बुनियादी सिद्धांत एक हैं।

प्रस्तावना

गांधीजी ने कहा है, ''मेरी यह दिली ख्वाहिश है कि इन्सान–इन्सान के बीच इस तरह का भाईचारा कायम हो जिसमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी और यहूदी सब एक समान शामिल हों, क्योंकि दुनिया के बस बड़े–बड़े मजहबों की बुनियादी सच्चाई में विश्वास है। मुझे यकीन है कि यह सब मजहब ईश्वर के दिए हुए हैं और उन लोगों के लिए जरूरी थे जिन्हें ये ईश्वर से मिले। मुझे इस बात का यकीन है कि अगर अलग–अलग मजहबों के मानने वालों की निगाह से पढ़ें तो हमें पता चलेगा कि सब मजहबों की जड़ एक है। एक ईश्वर में विश्वास हर धर्म का मूल आधार है। लेकिन मैं भविष्य में ऐसे किसी समय की कल्पना नहीं करता, जब इस धरती पर व्यवहार में केवल एक ही धर्म रहेगा। सिद्धांत की दृष्टि से चूंकि ईश्वर एक है, इसलिए धर्म भी एक ही हो सकता है। परन्तु व्यवहार में ऐसे कोई दो मनुष्य मेरे जानने में नहीं आए, जो ईश्वर के विषय में एक सी कल्पना करते हों। इसलिए मनुष्यों के विभिन्न स्वभावों तथा विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों की जरूरतें पूरी करने के लिए धर्म भी सदा भिन्न हो रहेंगे।''

गांधीजी एक धर्मप्राण मनीषी थे जिन्होंने प्रार्थनापूर्ण शोध और अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि सभी धर्म सच्चे हैं और उन सब में कुछ दोष भी हैं और अपने धर्म का दृढ़ता से पालन करते हुए मुझे दूसरे सब धर्मों को हिन्दू धर्म के समान ही प्रिय समझना चाहिए। इससे उचित रूप में यह निष्कर्ष भी निकलता है कि सभी मनुष्यों को हमें अपने निकटतम स्वजनों की तरह ही प्रिय मानना चाहिए और उनके बीच हमें कोई भेद नहीं रखना चाहिए। गांधीजी द्वारा सभी धर्मों के प्रति समान भाव रखने का मूल कारण यह था कि उन्होंने विश्व के सभी प्रमुख धर्मों का न केवल अध्ययन किया बल्कि उनके मर्म को ग्रहण किया। जहाँ हिन्दू धर्म के बारे में उन्हें उसकी सहिष्णुता पसन्द थी वहीं इस्लाम धर्म के बारे में उन्होंने कहा, ''अवश्य ही मैं इस्लाम को उसी अर्थ में शांति का धर्म मानता हूँ, जिस अर्थ में ईसाई, बौद्ध और हिन्दू धर्म शांत के धर्म हैं, बेशक मात्रा का फर्क है, परन्तु इन सब धर्मों का उद्देश्य शांति ही है। भारत की राष्ट्रीय संस्कृति के लिए इस्लाम की विशेष देन यह है कि वह एक ईश्वर में शुद्ध विश्वास रखता है और जो लोग उसके दायरे के भीतर हैं उनके लिए व्यवहार में वह मानव–भ्रातृत्व के सत्य को लागू करता है। इन्हें मैं इस्लाम की दो विशेष देने मानता हूँ, क्योंकि हिन्दू धर्म में भ्रातृत्व बहुत अधिक दार्शनिक बन गया है। इसी तरह दार्शनिक हिन्दू धर्म में ईश्वर के सिवा और कोई देवता नहीं है, फिर भी इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि व्यवहारिक हिन्दू धर्म इस मामले में इतना कट्टर और दृढ़ आग्रह नहीं रखता जितना इस्लाम रखता है।''

गांधीजी की हिन्दू–मुस्लिम एकता में जो हार्दिक आस्था थी वह इस्लाम के अध्ययन से अधिक दृढ़ बनी। वे लिखते हैं कि, ''जब मैं यरवदा जेल में था तो मैंने मौलाना शिबली की लिखी 'पैगम्बर की जीवनी' पढ़ी। मैंने 'उसवा–ए–सहाबा' नामक पुस्तक भी पढ़ी।'' उन्होंने लिखा, ''मुझे इस बात का दावा है कि मैंने धर्मों के एक सच्चे जिज्ञासु की हैसियत से पैगम्बर की जीवनी और कुरान शरीफ का अध्ययन किया है और इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि बुनियादी तौर पर कुरान अहिंसा की तालीम देता है।

कुरान हिंसा से अहिंसा को बेहतर मानता है। अहिंसा एक फर्ज के तौर पर इन्सान पर आयद की गई है जबकि हिंसा की किसी खास वक्ती जरूरत के तौर पर ही इजाजत दी गई है। पैगम्बर साहब ने क्या किया और क्या नहीं किया इसको नहीं बल्कि दुनिया के महान् पैगम्बरों ने लोगों को जो करने का उपदेश दिया उसके मुताबिक तलवार से नहीं हासिल हुई, वह सत्य की खोज में कठोर साधनाएँ करके अपने अल्लाह से दुआएँ माँग–माँगकर प्राप्त हुई। यदि आप पैगम्बर के महान् जीवन से इन साधनाओं के वर्षों को अलग कर दें तो आप पैगम्बर साहब की पैगम्बरी छीन लेंगे। मुहम्मद साहब की जिन्दगी के इन्हीं साधनाओं के वर्षों ने उन्हें पैगम्बरी अता की। जब किसी पैगम्बर को लोग पैगम्बर स्वीकार कर लेते हैं तब पैगम्बर के कामों को तोल सकते हैं।'' इस प्रकार यह स्पष्ट है कि विश्व के सबसे कट्टर धर्म इस्लाम में भी उन्होंने अहिंसा के गुण को ग्रहण किया। गांधी दर्शन की नींव ही इस तथ्य पर आधारित है कि, ''ईश्वर का दिया हुआ एक धर्म अगम्य है – वाणी से परे है। अपूर्ण मानव उसे अपनी–अपनी भाषा में रखते हैं और उनके शब्दों का अर्थ दूसरे मनुष्य करते हैं, जो स्वयं उतने ही अपूर्ण हैं। ऐसी स्थिति में किसके अर्थ को सही माना जाय? प्रत्येक मानव अपने दृष्टिकोण से सच्चा है, परन्तु यह असंभव नहीं कि प्रत्येक मानव गलत हो। इसीलिए सहिष्णुता की जयरत पैदा होती है। इस सहिष्णुता का अर्थ यह नहीं है कि हम अपने धर्म की उपेक्षा करें, परन्तु यह है कि अपने धर्म के प्रति हम अधिक ज्ञानमय, अधिक सात्विक और अधिक निर्मल प्रेम रखें।''

धार्मिक साहिष्णुता की यही भावना आगे चलकर गांधीजी के दर्शन में इतनी वृहदाकार हो गई कि उसने विश्व के समस्त धर्मों को अपने अन्तस में समेट लिया और यह भावना अपने पूर्णाकार रूप में प्रस्फुटित हुई कि जिस प्रकार किसी वृक्ष का तना एक होता है, परन्तु शाखाएँ और पत्ते अनेक होते हैं; उसी प्रकार सच्चा और पूर्ण धर्म तो एक ही है, परन्तु जब वह मानव के माध्यम से व्यक्त होता है, तब अनेक रूप ग्रहण कर लेता है। इसीलिए गांधीजी की यह दृढ़ मान्यता है कि, ''मैं यह नहीं मान सकता कि केवल ईसा में ही देवांश था। उनमें उतना ही दिव्यांश था जितना कृष्ण, राम, मुहम्मद या जरथ्रुष्ट में था। इसी तहर जैसे मैं वेदों या कुरान के प्रत्येक शब्द को ईश्वर–प्रेरित नहीं मानता, वैसे ही बाइबिल के प्रत्येक शब्द को भी ईश्वर–प्रेरित नहीं मानता। बेशक, इन पुस्तकों की समस्त वाणी ईश्वर–प्रेरित है, परन्तु अलग–अलग वस्तुओं को देखने पर उनमें से अनेकों में मुझे ईश्वर–प्रेरधा नहीं मिलती। मेरे लिए बाइबिल उतनी ही आदरणीय धर्म–पुस्तक है जितनी गीता और कुरान हैं।''

धर्म परिवर्तन के सम्बन्ध में गांधी जी के विचार –

गांधीजी सभी धर्मों को सत्य मानते थे तथापि वे यह भी स्वीकार करते थे कि सभी धर्म अपूर्ण हैं और सभी में दोष हो सकते हैं। चूंकि दुनिया के समस्त धर्म उसी एक बिन्दु पर पहुंचने वाले अलग–अलग मार्ग हैं अतः जब तक हम एक ही लक्ष्य पर पहुंचते हों तब तक यदि हम अलग–अलग मार्ग ग्रहण करें तो उसकी क्या चिन्ता है। गांधीजी की समस्त धर्मों के प्रति यही धारणा और यही विश्वास उन्हें इस सत्य की ओर प्रेरित करता है कि धर्म परिवर्तन की मनुष्य को कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि विविध धर्म तो उस ईश्वर की प्राप्ति के मार्ग मात्र हैं।

एक दिन मीरा बहिन ने गांधीजी से हिन्दू बनने की इच्छा अभिव्यक्त की तो उनका जवाब यह था कि मीरा बहिन को अपने ही धर्म में आस्था रखनी चाहिए क्योंकि धर्म में परिवर्तन मात्र करने से उनके नैतिक आचरण अथवा नैतिक मूल्यों में कोई परिवर्तन अथवा सुधार नहीं हो जाएगा। अतः व्यक्ति के लिए धर्म में परिवर्तन करने की अपेक्षा यह आवश्यक है कि वह अपने चरित्र में परिवर्तन करे और उसे इतना अधिक उज्ज्वल बनाए कि वह सत्य तक पहुंच सके क्योंकि गांधीजी के लिए सत्य ही ईश्वर है। गांधीजी ने कहा है, ''मेरी हिन्दू धर्मवृत्ति मुझे सिखाती है कि थोड़े या बहुत अंशों में सभी धर्म सच्चे हैं। सबकी उत्पति एक ही ईश्वर से हुई है, परन्तु सब धर्म अपूर्ण हैं; क्योंकि वे अपूर्ण मानव/माध्यम के द्वारा हम तक पहुंचे हैं। सच्चा शुद्धि का आंदोलन यह होना चाहिए कि हम सब अपने धर्म में रहकर पूर्णता प्राप्त करने का प्रयत्न करें। इस प्रकार की योजना में एकमात्र चरित्र ही मनुष्य की कसौटी होगा। अगर एक बाड़े से निकलकर दूसरे में चले जाने से कोई नैतिक उत्थान नहीं होता तो जाने से क्या लाभ? शुद्धि या तबलीग का फलितार्थ ईश्वर की सेवा ही होना चाहिए। इसलिए मैं ईश्वर की सेवा के खातिर यदि किसी का धर्म बदलने की कोशिश करूं तो उसका क्या अर्थ होगा, जब मेरे ही धर्म को मानने वाले रोज अपने कर्मों से ईश्वर का इंकार करते हैं? दुनियावी बातों के बनिस्पत धर्म के मामलों में यह कहावत अधिक लागू होती है कि 'वैद्यजी, पहले अपना इलाज कीजिए।''

गांधीजी धर्म परिवर्तन की आधुनिक पद्धति के सख्त विरोधी थे क्योंकि वे इस तथ्य को स्वीकार करते थे कि धर्म के परिवर्तन के पीछे व्यक्ति के नैतिक चरित्र में उत्थान का कोई भाव नहीं होता है। गुजरात विद्यापीठ में अपने एक भाषण में गांधीजी ने कहा – ''मैं यह नहीं चाहता कि मेरे मकान के चारों तरफ ऊंची–ऊंची दीवारें खड़ी हों। सब तरफ की खिडकियाँ ठूँस–ठूँसकर बन्द कर दी गई हों। मैं चाहता हूँ कि मेरे मकान के चारों तरफ सब मुल्कों की संस्कृतियाँ खुली हवा की तरह पूरी आजादी के साथ बहती रहें पर मैं यह नहीं चाहता कि कोई हवा मेरे पैर उखाड़ दे।'' उन्होंने आगे कहा, ''गुजरात विद्यापीठ का यह मकसद नहीं है कि सिर्फ प्राचीन संस्कृतियों से ही गुजारा चलाती रहे या उन्हीं को दोहाराती रहे। इसके विपरीत गुजरात विद्यापीठ एक ऐसी नई कल्चर के निर्माण करने की उम्मीद करती है जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं में होंगी और जो हमारे बाद के, इस समय के तजरूबों से मालामाल होगी। यह विद्यापीठ उन सब संस्कृतियों के समन्वय और मेल के पक्ष में है जो हिन्दुस्तान आकर बस गई हैं, जिन्होंने हिन्दुस्तानी जिंदगी पर असर डाला है और जिन पर खुद इस मुल्क का रूहानी असर पड़ा है। कुदरती तौर पर हमारा समन्वय स्वदेशी ढंग का होगा जिसमें हर कल्चर को मुनासिब जगह मिलेगी। हमारा यह समन्वय उस तरह के अमेरिकी तर्ज का न होगा, जिसमें जिन लोगों की तादाद या असर ज्यादा है, उनकी कल्चर ने बाकी लोगों की कल्चर को अपने अन्दर हजम कर लिया है और जहाँ समन्वय का मकसद सब राग–रागिनियों को मिलाकर एक सुन्दर सुरीला राग पैदा करने के बजाय जबरदस्ती एक बनावटी एकता कायम करना है।''

गांधीजी विभिनन धर्मों के मध्य समन्वय की भावना का विकास चाहते थे जैसे किसी वाद्य यंत्र में स्वरों के अनूठे समन्वय

से मधुर संगीत की उत्पति होती है। इसलिए गांधीजी के मत में एक अच्छे हिन्दू या अच्छे मुसलमान को अपने देश का प्रेमी होने के कारण अधिक अच्छा हिन्दू अथवा अधिक अच्छा मुसलमान होना चाहिए। हमारे देश के सच्चे हित और हमारे धर्म के सच्चे हित के बीच कभी कोई संघर्ष हो ही नहीं सकता। जहाँ ऐसा कोई संघर्ष दिखाई देता है, वहाँ हमारे धर्म में अर्थात् हमारी नीति में कोई दोष होना चाहिए। सच्चे धर्म का अर्थ है अच्छे विचार और अच्छा आचरण। सच्च देश प्रेम का अर्थ भी अच्छे विचार और अच्छा आचरण होता है। दो समानार्थक वस्तुओं के बीच तुलना करना गलत है।

गांधीजी धर्म परिवर्तन के आधुनिक उपायों के विरोधी थे क्योंकि उनकी यह मान्यता थी कि धर्म एक व्यक्तिगत मामला है जिसका संबंध हृदय से है। इसलिए मानव दया के कार्यों की आड़ में धर्म परिवर्तन करना अहितकर है। गांधीजी कहते हैं, ''कोई ईसाई डॉक्टर मुझे किसी बीमारी से अच्छा कर दे तो मैं अपना धर्म क्यों बदल लूँ, या जिस समय मैं उसके असर में रहूँ तब वह डॉक्टर मुझसे हस तरह के परिवर्तन की आशा क्यों रखे या ऐसा सुझाव क्यों दे? क्या डॉक्टरी सेवा अपने आप में ही एक पारितोषिक और संतोष नहीं है? या जब मैं किसी ईसाई शिक्षा–संस्था में शिक्षा लेता होऊँ तब मुझ पर ईसाई शिक्षा क्यों थोपी जाए? मेरी राय में ये बातें ऊपर उठाने वाली नहीं हैं और अगर भीतर ही भीतर शत्रुता पैदा नहीं करती तो भी सन्देह अवश्य उत्पन्न करती हैं। धर्म–परिवर्तन के तरीके ऐसे होने चाहिए, जिन पर सीजर की पत्नी की तरह किसी को कोई शक न हो सके। धर्म की शिखा लौकिक विषयों की तरह नहीं दी जाती। वह हृदय की भाषा में दी जाती है। अगर किसी आदमी में जीता–जागता धर्म है तो उसकी सुगन्ध गुलाब के फूल की तरह अपने–आप फैलती है। सुगन्ध दिखाई नहीं देती, इसलिए फूल की पंखुड़ियों के रंग की प्रत्यक्ष सुन्दरता से उसकी सुगन्ध का प्रभाव अधिक व्यापक होता है। मैं धर्म–परिवर्तन के विरूद्ध नहीं हूँ, परन्तु मैं उसके आधुनिक उपायों के विरूद्ध हूँ। आजकल और बातों की तरह धर्म–परिवर्तन ने भी एक व्यापार का रूप ले लिया है। मुझे इसाई–धर्म प्रचारकों की एक रिपोर्ट पढ़ी हुई याद है, जिसमें बताया गया था कि प्रत्येक व्यक्ति का धर्म बदलने में कितना खर्च हुआ और फिर 'अगली फसल' के लिए बजट पेश किया गया था। हाँ, मेरी राय जरूर है कि भारत के महान् धर्म उसके लिए सब तरह से काफी हें। इसाई और यहूदी धर्म के अलावा हिन्दू धर्म और उसकी शाखाएँ, इस्लाम और पारसी धर्म सब सजीव धर्म हैं। दुनिया में कोई भी एक धर्म पूर्ण नहीं है। सभी धर्म, उनके मानने वालों के लिए समान रूप से प्रिय हैं। इसलिए जरूरत संसार के सब महान् धर्मों के अनुयायियों में सजीव और मित्रतापूर्ण संपर्क स्थापित करने की है, न कि हर सम्प्रदाय द्वारा दूसरे धर्मों की अपेक्षा अपने धर्म की श्रेष्ठता जताने की व्यर्थ कोशिश करके आपस में संघर्ष पैदा करने की। ऐसे मित्रतार्पूा संबंध के द्वारा हमारे लिए अपने–अपने धर्मों की कमियां और बुराइयाँ दूर करना संभव होगा।

मैंने ऊपर जो कुछ कहा है उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जिस प्रकार का धर्म–परिवर्तन मेरी दृष्टि में है उसकी हिन्दुस्तान में जरूरत नहीं है। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि आत्मशुद्धि, आत्म–साक्षात्कार के अर्थ में धर्म परिवर्तन किया जाय। परन्तु धर्म परिवर्तन करने वालों का यह हेतु कभी नहीं होता।''

धर्मान्तरण एवं धर्म परिवर्तन के सन्दर्भ में गांधीजी के विचारों की गहन मीमांसा यह स्पष्ट करती है कि गांधीजी एक उच्च कोटि के मानवतावादी कर्मयोगी थे। सभी धर्मों के प्रति सम्मान और प्रेम की यह भावना का बीज समय पाकर भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में वट्वृक्ष के रूप में विकसित हुआ जिसने अपनी शीतल छाया से युगों–युगों से पीड़ित जनमानस को शांति प्रदान की।

पूजा स्थलों के सन्दर्भ में गांधी जी के विचार –

कड़वे अनुभवों ने गांधीजी को यह सिखाया कि सारे मन्दिर ईश्वर के निवास नहीं होते। वे शैतान के निवास भी हो सकते हैं। पूजा के ये स्थान तब तक कोई मूल्य नहीं रखते जब तक उनका पुजारी ईश्वर का भक्त न हो। मन्दिर, मस्जिद और गिरजाघर वैसे ही होते हैं जैसे मनुष्य उन्हें बनाता है। इसलिए मन्दिरों में जाने से हमें कोई लाभ होता है या नहीं होता, यह हमारी मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है। इन मंदिरों में हमें नम्रता की और पश्चाताप की भावन से जाना चाहिए। वे सब ईश्वर के निवास हैं। बेशक, ईश्वर हर मनुष्य में रहता है, उसकी सृष्टि के हर परमाणु में उसका वास है, इसी पृथ्वी की हर वस्तु में उसका निवास है। परन्तु क्योंकि हम अत्यन्त प्रमादी मानव इस सत्य को नहीं समझते कि ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है, इसलिए हम मंदिरों पर विशिष्ट पवित्रता का आरोपण करते हैं और मानते हैं कि ईश्वर उन मंदिरों में रहता है। अतः तब हमें अपने शरीर, अपने मन और अपने हृदय स्वच्छ और शुद्ध कर लेने चाहिए। हमें प्रार्थनामय वृत्ति से मंदिरों में प्रवेश करना चाहिए और ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह वहाँ आने के फलस्वरूप हमें अधिक पवित्र पुरुष और अधिक पवित्र स्त्री बनावे और यदि आप इस बूढ़े आदमी की सलाह मानें, तो मैं कहूँगा कि आपने जो शारीरिक मुक्ति–अस्पुश्यता से मुक्ति–प्राप्त की है, वह आत्मा की मुक्ति सिद्ध होगी।

चूंकि गांधीजी ईश्वर के नाम पर उपवास किया करते थे, अतः इस सम्बन्ध में उन्हें अनेक रहस्याजनक अनुभूतियाँ हुआ करती थी। ऐसी ही एक रहस्यवादी अनुभूति को व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा है, ''इसका सम्बन्ध अस्पृश्यता निवारण सम्बन्धी मेरे इक्कीस दिवसीय उपवास से है। मैं सो रहा था। रात के करीब बारह बजे मुझे किसी चीज ने जगाया और अचानक ही मैंने एक फुसफुसाती हुई आवाज सुनी, जिसने कहा तुझे उपवास करना चाहिए। मैं पूछता हूँ– कितने दिन के लिए? उस आवाज ने उत्तर दिया–इक्कीस दिन के लिए। कब शुरू करूं मैंने पूछा? जबाव मिला तुम कल शुरू करो। इस प्रकार की अनुभूति मुझे जीवन में न इसके पहले कभी हुई और न इसके बाद। मेरा मन इस घटना के लिए तैयार नहीं था और न ही मेरा इस ओर झुकाव था। लेकिन निश्चय ही वह आवाज बहुत स्पष्ट रूप में मेरे सामने आई।''

इसी घटना का वर्णन गांधीजी ने दूसरे शब्दों में इस प्रकार किया है, ''मुझे कोई आकार नहीं दिखा किंतु फिर भी मैंने एक आवाज अवश्य सुनी जो दूर से आती हुई लगती थी और फिर भी पास मालूम पड़ती थी। वह निस्सन्देह एक मनुष्य की आवाज थी और थी बेहद आकर्षक। मैं उस समय सपना नहीं देख रहा था, मैंने वह आवाज सुनी। उस आवाज को सुनने के पहले मेरे अन्तस में एक भीषण संघर्ष चल रहा था कि अचानक यह आवाज मुझ पर हावी हो गई। मैंने उसे सुना और निश्चयात्मक रूप से उसका

अस्तित्व बोध किया। तिथि एवं समय का निश्चय भी मैंने उसी के साथ किया।'' गांधीजी को इस प्रकार जो रहस्यात्मक अनुभूतियाँ होती थीं, उन्हें पंडित जवाहर लाल नेहरू ने प्रज्ञा की संज्ञा दी क्योंकि वे यह मानते थे कि गांधीजी कभी–कभी अपनी अन्तःप्रज्ञा से कार्य करते थे, जिनको बुद्धि एवं तर्क द्वारा परिभाषित नहीं किया जा सकता। गांधीजी ने धर्म के सन्दर्भ में जिन विचारों की रूपरेखा दी है वह विश्व के सभी धर्मों का सार तत्व कहा जा सकता है।

गांधीय दर्शन का समग्र अध्ययन और विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि दक्षिण अफ्रीका एवं भारत में गांधीजी का सम्पूर्ण आन्दोलन राजनीतिक क्षेत्र में धर्म की आस्था से अनुप्राणित था। वे एक ऐसे संत राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने राजनीति की तरफ समाज के श्रेष्ठ व्यक्तियों को आकर्षित किया और यह प्रतिपादित किया कि राजनीति गुण्डों एवं नैतिक रूप से भ्रष्ट और पतित लोगों के लिए नहीं है बल्कि राजनीति उन व्यक्तियों के लिए है जो इसे मानव के कल्याण का एक साधन मानते हैं और उसके माध्यम से वे 'सर्वभूत हिताय' की परिकल्पना करके उसे वास्तविकता प्रदान करते हैं। महात्मा गांधी ने मानवतावादी धर्म का पोषण किया जिसका चरम लक्ष्य सेवा है। गांधीजी द्वारा प्रतिपादित धर्म के मुख्य तत्व सत्य और अहिंसा हैं। गांधीजी का धर्म सर्वोदय का धर्म था, दरिद्रनारायण का धर्म था, इसी में उनका स्वराज्य था। उनका मत था कि जब तक एक भी व्यक्ति की आँख में आँसू हैं तब तक स्वराज्य अधूरा है।

महात्मा गांधी के जीवन–दर्शन की यह एक विशेषता रही है कि उन्होंने चिन्तन के ऐसे किसी क्षेत्र को नहीं छोड़ा जिस पर उन्होंने विचार नहीं किया है। सूक्ष्म से सूक्ष्म तथ्यों पर भी उनकी पकड़ इतनी गहरी है कि दुनिया के श्रेष्ठतम विचारकों की आभा भी उसी तरह मंद हो जाती है जेसे सूर्य के उदय होने पर तारे आभाहीन हो जाते हैं। गांधीजी ने विचारों को इतनी सहज ढ्ढौर बोधगम्य भाषा में अभिव्यक्त किया है कि एक साधारण इंसान के हृदय में वे आसानी से स्थान बना लेते हैं।

अस्तु, यह कहा जा सकता है कि गांधीजी एक ऐसे धर्मप्राण मनीषी थे, जिनके लिए धर्म और प्राण दोनों एकाकार हो गए थे। जिसे स्पष्ट करते हुए उन्होंने स्वयं कहा था, ''अपने हर एक शब्द के पीछे जिसे मैंने उच्चारित किया हो और प्रत्येक कार्य के पीछे जिसे मैंने किया हो उन सबके पीछे धार्मिक चेतना और सम्पूर्ण धार्मिक उद्देश्य मेरे लोक जीवन में रहा है।'' गांधीजी ने अपने आचरण और कार्यों से यह सिद्ध कर दिखाया कि धर्म खास दिन या खास समय के लिए नहीं है बल्कि मनुष्य के प्रत्येक कार्य में उसकी अनुभूति की जा सकती है।

संदर्भ–सूची

1.एम. के. गांधी, 'नॉन वॉयलेंस इन पीस एण्ड वार', जिल्द 1, पृष्ठ 38
2.एम.के. गांधी, 'माई रिलीजन',
3.एम.के. गांधी, 'माई रिलीजन', नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, सन् 1955, पृष्ठ–3
4.एन. के. बोस (स.)ण 'सिलेक्शनस फ्रॉम गांधी', इलाहाबाद सन् 1948, पृष्ठ 22
5.यंग इण्डिया, 1 जून 1921, 19 मई 1924, 19 मई 1927, 9 फरवरी 1930, 23 अप्रेल 1931
6.'हिन्द स्वराज्य',
7.मोहनदास करमचन्द गांधी, ऑटोबायोग्राफी, पूर्वोक्त, पृष्ठ 530–565
8.हिन्द स्वराज्य
9.हरिजन बंधु, 16 फरवरी 1931, 20 अक्टूबर, 1927 19 मार्च 1933, 6 मई 1933, 14 मई 1938, 10 दिसम्बर 1938,
10.हरिजन, 2 फरवरी 1934, 16 फरवरी 1934, 17 अप्रैल, 1937, 24 दिसम्बर, 1938,, 12 जुलाई 1940,
11.प्यारेलाल, 'महात्मा गांधी : दि लास्ट फेज', भाग–1, पृष्ठ 439–42
12.पी. मीणा महाजन एवं के.एस. भारती, 'फाउण्डेशन्स ऑफ गांधियन थॉट', देतन्स पब्लिशर्स, नई दिल्ली, सन् 1987, पृष्ठ–1–20
13.प्रार्थना प्रवचन, 19 अक्टूबर, 1947
14.रोम्याँ रोलाँ, 'महात्मा गांधी',
15.शंभूरत्न त्रिपाठी, 'गांधी–धर्म और समाज', पृष्ठ 22
16.डॉ. बी. एन. पाण्डे, 'गांधी महात्मा : समग्र चिंतन', गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली, सन् 1994, पृष्ठ 123
17.उ.न. ढेबर, 'समाज कल्याण के सूत्रधार', हिन्दुस्तान, 2 अक्टूबर, 1969
18.वाल्मीकि चौधरी, 'गांधीजी पैगम्बर भी थे और राजनीतिज्ञ भी', हिन्दुस्तान, 2 अक्टूबर, 1971
19.नवजीवन, 30 जनवरी, 1931, 21 जुलाई, 1929
20.गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित 'रामचरितमानस' के आरम्भ से उद्धृत
21.गांधीजी, 'फ्राम यरवदा मंदिर', नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, सन् 1935, प्रकरण–10

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org